हवा का रुख कैसा है

हवा का रुख कैसा है,हम समझते हैं
हम उसे पीठ क्यों दे देते हैं,हम समझते हैं

हम समझते हैं खून का मतलब
पैसे की कीमत हम समझते हैं
क्या है पक्ष में विपक्ष में क्या है,हम समझते हैं
हम इतना समझते हैं
कि समझने से डरते हैं और चुप रहते हैं।

चुप्पी का मतलब भी हम समझते हैं
बोलते हैं तो सोच-समझकर बोलते हैं हम
हम बोलने की आजादी का
मतलब समझते हैं
टुटपुंजिया नौकरी के लिये
आज़ादी बेचने का मतलब हम समझते हैं
मगर हम क्या कर सकते हैं
अगर बेरोज़गारी अन्याय से
तेज़ दर से बढ़ रही है
हम आज़ादी और बेरोज़गारी दोनों के
ख़तरे समझते हैं
हम ख़तरों से बाल-बाल बच जाते हैं
हम समझते हैं
हम क्योंबच जाते हैं,यह भी हम समझते हैं।

हम ईश्वर से दुखी रहते हैं अगर वह
सिर्फ़ कल्पना नहीं है
हम सरकार से दुखी रहते हैं
कि समझती क्यों नहीं
हम जनता से दुखी रहते हैं
कि भेड़ियाधसान होती है।

हम सारी दुनिया के दुख से दुखी रहते हैं
हम समझते हैं
मगर हम कितना दुखी रहते हैं यह भी
हम समझते हैं
यहां विरोध ही बाजिब क़दम है
हम समझते हैं
हम क़दम-क़दम पर समझौते करते हैं
हम समझते हैं
हम समझौते के लिये तर्क गढ़ते हैं
हर तर्क गोल-मटोल भाषा में
पेश करते हैं,हम समझते हैं
हम इस गोल-मटोल भाषा का तर्क भी
समझते हैं।

वैसे हम अपने को किसी से कम
नहीं समझते हैं
हर स्याह को सफ़ेद और
सफ़ेद को स्याह कर सकते हैं
हम चाय की प्यालियों में
तूफ़ान खड़ा कर सकते हैं
करने को तो हम क्रांति भी कर सकते हैं
अगर सरकार कमज़ोर हो
और जनता समझदार
लेकिन हम समझते हैं
कि हम कुछ नहीं कर सकते हैं
हम क्यों कुछ नहीं कर सकते हैं
यह भी हम समझते हैं।

होश में आते ही नाबालिग आदिवासी लड़की बोली सीआरपीएफ जवानों ने किया है मेरा बलात्कार

दंतेवाड़ा का पूरा पुलिस प्रशासन केस को दबाने व बदनामी से बचने के लिये लगा है झोलमोल करने में, युवती के आसपास चौबीसों घंटे है पुलिस का पहरा।

लिंगाराम कोडोपी की रिपोर्ट

छत्तीसगढ़ राज्य के दंतेवाड़ा जिला ग्राम पंचायत समेली के पांडू पारा की जिस नाबालिग युवती का 14 सितंबर को बलात्कार हुआ था उसको 18 सितंबर को होश आया है। युवती ने होश में आते ही पुष्टि की है कि उसके साथ बलात्कार हुआ है।

युवती के मुताबिक उसके साथ इस तरह का घिनौना कृत्य करने वाले CRPF के जवान हैं। गौरतलब है कि ग्राम पालनार और ग्राम समेली इन दोनों पंचायत के बीच की दूरी 9 किलोमीटर है। दोनों गांव में CRPF कैम्प हैं।

हर दिन सुरक्षा के नाम पर कैम्पों से CRPF के जवान निकलते हैं। ये आदिवासियों की सुरक्षा करते हैं या सड़क की सुरक्षा करते हैं यह बात तो CRPF के जवान ही बता सकते हैं। रायपुर में बैठे CRPF के एडीजे एके सिंह, डीआईजी, आईजी व अन्य अधिकारियों से कौन पूछेगा कि सुरक्षा के नाम पर आदिवासी महिलाओं का बलात्कार, पुरुषों की हत्या क्यों हो रही है? लगता है सीआरपीएफ के जवान दारू पीकर सुरक्षा करते हैं। वैसे भी CRPF के जवानों को भारी मात्रा में राज्य और केंद्र सरकार शराब मुहैया कराती हैं।

केपीएस गिल ने जिस तरह पत्रकारों के माध्यम से छत्तीसगढ राज्य के मुख्यमंत्री की पोल खोली "वेतन लो चुपचाप मौज मस्ती करो",केपीएस गिल शायद ईमानदार पुलिस अफसर हैं। ईमानदारी की वजह से उन्होंने रमन सिंह का ऑफर ठुकरा दिया, क्योंकि खुद के ऐशोआराम के लिए मासूम आदिवासियों की नक्सल के नाम पर हत्या नहीं करवाना चाहते थे। ऑफर को स्वीकार कर लिये होते तो आज छत्तीसगढ़ राज्य के बस्तर संभाग के आदिवासियों का क्या होता आप सोचिये?

यह कोई पहली घटना नहीं है। 2017 में कैशलेस कहे जाने वाले ग्राम पालनार के आदिवासी छात्रावास में 17 बच्चों के साथ CRPF और दंतेवाड़ा जिला प्रशासन के आला अधिकारियों के बीच रक्षाबंधन के नाम पर छेड़खानी का मामला सामने आया था।

डॉक्टरों के हवाले से पता चला कि बलात्कार हुआ भी होगा तो चौबीस घंटे के अंदर पता चल जाता, लेकिन 60 घण्टे बाद पता लगाना थोड़ा मुश्किल है। हम यकीन के साथ युवती के साथ बलात्कार हुआ है, कह सकते हैं क्योंकि युवती उठ—बैठ नहीं पा रही है। कमर में दर्द, हाथों व गुप्तांग में भी दर्द बता रही है। डॉक्टर तो कह रहे हैं कि खून सही है, एनीमिया जैसी कोई बीमारी नहीं है।

दंतेवाड़ा का पूरा पुलिस प्रशासन केस को दबाने व बदनामी से बचने के लिये झोलमोल करने में लगा हुआ है। युवती के आसपास 24 घण्टे पुलिस का पहरा है। पहरा होने के बावजूद हमारे पास युवती की कही बातों का आडियो टेप है। सब युवती को झूठा साबित करने पर तुले हुए हैं। जिला दंतेवाड़ा, छत्तीसगढ़ राज्य के ग्राम समेली, पांडूपारा की अस्पताल में भर्ती इस आदिवासी युवती का सीआरपीएफ द्वारा बलात्कार की बात परिजन शुरुआत से ही कह रहे थे, जिसका शुरुआत में कुआकोण्डा अस्पताल में इलाज चल रहा था, बाद में हालत देखते हुए दंतेवाड़ा रेफर कर दिया गया।

यह घटना 14/9/18 की है, जब युवती हल जोत कर खाना खाने के बाद बण्डा लेकर घर से आधा किलोमीटर दूर लकड़ियां लेने जंगल गयी हुई थी। युवती जब शुक्रवार 14 सितंबर को शाम को घर नहीं पहुँची तो परिजनों को लगा कि युवती घर नहीं पहुंची हैं, तो गाँव के अन्य ग्रामीणों को बताया तब गाँव के ग्रामीण युवती को ढूढने निकले शनिवार सुबह से शाम तक जंगल का छान मारा, वह नहीं मिली। 16 की सुबह पांच बजे से गांवों के ग्रामीणों ने ढूढ़ना शुरू किया तो सुबह सात बजे जंगल में बेहोशी की हालत में मिली। गांव के ग्रामीणों ने युवती को उठा कर अस्पताल ले आये।

सूत्रों के अनुसार 14/9/18 को ग्राम पालनार में साप्ताहिक बाजार लगता है। ग्राम समेली और ग्राम पालनार के CRPF केम्प के जवान सड़क की सुरक्षा के नाम पर निकलते हैं और शाम तक सड़क किनारे जंगलों में रहते हैं।

गाँव के ग्रामीणों का यह भी कहना है कि 14/9/18, शुक्रवार को जिस जंगल में घटना हुई है, उस जंगल के आसपास CRPF के जवानों को घूमते हुए गांव के ग्रामीणों ने देखा है। घटनास्थल पर जूतों के निशान हैं, जूते पहनकर आदिवासी जंगल में नहीं घूमते हैं। युवती 16 वर्ष की है, माँ और पिता का कहना है। जिस जगह पे घटना हुई है उस जगह पर टूटी हुई चूड़ियों के टुकड़े भी मिले हैं। शुरुआत में नाबालिग लड़की की हालत देखकर डॉक्टर कह रहे थे कि युवती की मृत्यु हो सकती है। पीड़ित युवती के साथ परिजन है। वहां बस्तर की सामाजिक कार्यकर्ता सोनी सोरी, गांव के सरपंच संजय कुंजाम, आम आदमी पार्टी के दंतेवाड़ा प्रत्याशी बल्लू भवानी, भूतपूर्व विधायक सीपीआई के नंदा राम सोरी, कटेकल्याण के ब्लाक अध्यक्ष चमन लाल कुंजाम, राष्ट्रीय कांग्रेस जिला दन्तेवाड़ा की विधायक देवती कर्मा के बेटे बन्टी कर्मा भी घटना की जायजा लेने जिला अस्पताल पहुंचे थे।

(पत्रकार लिंगाराम कोडोपी बस्तर में रहते हैं और आदिवासी उत्पीड़न के खिलाफ लगातार लिखते हैं। यह रिपोर्ट उनके एफबी पोस्ट को संपादित कर ली गई है)

छत्तीसगढ़ के दन्तेवाड़ा जिले के समेली गांव में सीआरपीएफ कैम्प है बलात्कार के पीछे

आज से पांच दिन पहले 14 तारीख को सोलह साल की एक आदिवासी लड़की जंगल से लकड़ी इकट्ठा करने गई। दो दिन तक लड़की वापिस नहीं आई। दो दिन बाद लड़की बेहोशी की हालत में जंगल में मिली। लड़की के परिवार के सदस्यों ने सामाजिक कार्यकर्ताओं सोनी सोरी और लिंगा कोड़ोपी को बुलाया।

लड़की को अस्पताल लेकर आया गया लेकिन पुलिस बदमाशी पर अड़ गई कि पहले कागजी कार्यवाही करी जायेगी। सोनी सोरी और लिंगा कोड़ोपी की ज़िद के बाद लड़की का इलाज शुरू हुआ। सीआरपीएफ और पुलिस वालों ने अस्पताल को घेरा हुआ है।

मानवाधिकार कार्यकर्ता बेला भाटिया के कहासुनी करने के बाद सिर्फ लड़की की मां को लड़की के साथ रुकने और मजिस्ट्रेट के सामने लड़की के बयान के समय चाचा को रहने की इजाजत दी गई। लड़की ने बयान दिया है कि उसके साथ सीआरपीएफ के जवानों ने बलात्कार किया है।

क्या सरकार ने सैनिकों को बस्तर में वहां की लड़कियों से बलात्कार करने भेजा है ? दंतेवाड़ा के स्कअभिषेक पल्लव ने एक बदमाशी पूर्ण बयान दिया है और वह बलात्कार का यह मामला उठाने की वजह से लिंगा कोडोपी को जेल में डालने की धमकी दे रहा है।

अगर पुलिस या सीआरपीएफ का कोई अधिकारी बलात्कारियों को बचाने और पीड़ित की मदद करने के लिये लिंगा कोड़ोपी या सोनी सोरी को इस मामले को उठाने की सज़ा देने की कोशिश करेगा तो हम इस मामले को अदालत में ले जाकर ऐसे बदमाश अधिकारियों के खिलाफ बलात्कारियों की मदद करने के लिये अदालती कार्यवाही तुरंत शुरू करेंगे।

हम इन बदमाशों को आदिवासी महिलाओं पर हमला करना असंभव बना देंगे।

- हिमांशु कुमार

ऋषिपाल चौहान
चेयरमैन, जीवा पब्लिक स्कूल

आंतरिक व बाह्य तालमेल से समाज में उद्धार

हमारा जीवन अनेक रंगों से रंगा हुआ है, इन रंगों में सुख-दुख, धूप-छाँव, आशा-निराशा अनेक प्रकार की विध्न बाधाएँ एवं सुखद परिस्थितियाँ भी आती हैं। इन सभी परिस्थितियों के साथ सुर से सुर मिलाकर अर्थात तालमेल बिठाकर ही हम अपनी मंज़िल तक पहुँचते हैं। जीवन में हमारा सबके साथ तालमेल होना अति आवश्यक है इसके लिए हमें इस शब्द का अर्थ भी समझना चाहिए। इसका तात्पर्य है हम अपने आसपास, पड़ोसी, मित्रों, परिजनों को समझें अर्थात हमारे आसपास जो भी हो उनके साथ अपने विचारों की सामंजस्यता बनाए। दूसरों की परेशानियों को समझें, दूसरों की भावनाओं की कद्र करें। सबके प्रति अपनापन प्रकट करें, यह आपसी तालमेल की भावना हमारे एवं हमारे समाज के लिए अत्यंत आवश्यक है। इसी से हम प्रगतिशील एवं उन्नतशील होगे।

इसी प्रकार हमारे जीवन का भी एक लक्ष्य होता है, हम लक्ष्य को भली भाँति समझें तथा उसको पाने के लिए उचित मार्ग को तय करें, प्रत्येक परिस्थिति को आपस में उचित ढंग से जोड़े तथा हरसंभव प्रयास करें कि किस प्रकार वह परिस्थितियाँ हमारी अनुकूल हो। जैसे हम कार चलाते हैं तो हमें अपनी प्रत्येक गतिविधि में तालमेल रखना पड़ता है नहीं तो कोई भी दुर्घटना घटित हो सकती है। हमारा जीवन भी इसी सिद्धान्त पर आधारित है। हमें अपने आंतरिक व बाह्य दुनिया के साथ सामंजस्य बनाना होता है, जितना आवश्यक है कि हम बाहरी दुनिया के साथ तालमेल बनाए, उतना ही आवश्यक है कि हम आंतरिक सामंजस्य भी बनाए रखें, जैसे हमारी बुद्धि, विवेक, प्रकृति हमारे आचार-विचार का आपस में तालमेल होना आवश्यक है। इसी प्रकार बच्चों को भी विद्यालय इसलिए भेजा जाता है कि वह समाज के साथ तालमेल बिठाना सीखें। अपने परिवार, अपने सहपाठियों एवं अपने साथ तालमेल बिठाना सीखें। इसलिए बच्चे सर्वप्रथम अपने साथ तालमेल बिठायें। स्वयं को समझे तथा जीवन में प्रगति की राह पर चले तभी समाज भी उन्नत व प्रगतिशील होगा।